हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

ISSN : 2249-930X

प्रकाशक : डॉ. निर्मला अग्रवाल, प्रबंधमंत्री, भारतीय हिंदी परिषद्
हिंदी-विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Website : www.bhartiyahindiparishad.com
Email : hindianusheelan@gmail.com

मूल्य : ₹ 100.00

अक्षर संयोजन : राजेश शर्मा, मो. : 9450252918
मुद्रक : प्रभा कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्स, विश्वविद्यालय मार्ग, प्रयागराज

अनुक्रम

1. विमर्श — 7
प्रोफेसर नंद किशोर पाण्डेय

2. संवाद — 13
प्रोफेसर नरेन्द्र मिश्र

3. गांधी की पत्रकारिता का मूलाधार : राष्ट्रीयता — 22
डॉ. कमलकिशोर गोयनका

4. हिन्दी कवियों की दृष्टि में गाँधी — 38
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

5. महात्मा गांधी, उनका दाय और हमारा दायित्व — 41
गिरीश्वर मिश्र

6. गान्धी के 'हिन्द स्वराज्य' की मूल चेतना — 48
डॉ. सत्येन्द्र शर्मा

7. पितृसत्तात्मक विवशता और कस्तूरबा — 55
प्रो. शिव प्रसाद शुक्ल

8. महात्मा गाँधी पर रचित प्रमुख प्रबन्धकाव्य — 63
डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र

9. आधुनिक हिंदी काव्य में गाँधी और गाँधी दर्शन — 72
डॉ. निर्मला अग्रवाल

10. गांधी और अरुणाचल — 80
प्रो. हरीश कुमार शर्मा

11. गांधी की सांस्कृतिक अवधारणा — 86
प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी

12. मुंशी प्रेमचंद के कथा-साहित्य पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव — 90
डॉ. विवेक शंकर

13. गाँधी जी की दृष्टि और स्त्री विमर्श — 95
डॉ. चम्पा सिंह

14. बर्बरता के विरुद्ध भद्रता का आह्वान : गाँधी चिन्तन — 100
प्रोफेसर (डॉ.) किशोरीलाल रैगर

230

44. गाँधीजी के नारी संबंधी विचार 300
डॉ. आशीष सिसोदिया
45. उम्मीद का दामन : गाँधी 305
(हिंदी स्वराज के विशेष संदर्भ में)
डॉ. नवीन नन्दवाना
45. प्रेमचंद की कहानियों में प्रतिबिम्बित गाँधी दर्शन 314
डॉ. नीतू परिहार
46. महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार 320
डॉ. सुनीता सिंह

विमर्श

महात्मा गाँधी का संघर्षमय जीवन और भारतीय मानस

प्रोफेसर नंद किशोर पाण्डेय

महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर उन पर लिखी अनेक पुस्तकों के साथ ही उनके पत्रों, प्रार्थना-प्रवचन, डायरी, अनेक संपादकीय, आलेख, स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय महानुभावों के प्रति उनके विचार तथा गांधी जी के प्रति व्यक्त लेखकों के विचारों को रुचिपूर्वक पढ़ा। वर्ष 2020 में गांधीजी पर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लिखा भी। केंद्रीय हिंदी संस्थान की प्रतिष्ठित पत्रिका 'गवेषणा' के महात्मा गांधी विशेषांक का संपादन प्रधान संपादक के रूप में किया। 'हिंदी अनुशीलन' के महात्मा गांधी विशेषांक का संपादन करते हुए गौरव की अनुभूति हो रही है। महात्मा गांधी को देश-विदेश में खूब पढ़ा गया है फिर भी जितना पढ़ा जाना चाहिए उतना नहीं पढ़ा गया। यत्र-तत्र कुछ चर्चित घटनाओं और प्रसंगों की ही चर्चा होती है। उनके लेखन का क्षेत्र विस्तृत और बहुआयामी है। अच्छी बात यह है कि विद्यार्थी जीवन से लेकर मृत्यु के दिन तक का लिखित अभिलेख प्राप्त होता है। उनकी डायरी तो है ही अन्य सहयोगियों तथा लेखकों ने भी संस्मरणों के माध्यम से जीवन की घटनाओं को जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया है।

गांधीजी ने अपने लेखन की शुरुआत अन्नाहार पर कई लेख क्रमशः लिखकर की थी। ये सभी आलेख 'वेजिटेरियन' में अंग्रेजी में प्रकाशित हुए। उनका हिंदी अनुवाद बहुत पहले ही छप गया था। 'भारतीय अन्नाहारी' शीर्षक से उन्होंने 7.2.1891, 14.2.1891, 21.2.1891, 28.2.1891, 7.3.1891 तथा 14.3.1891को लिखा। यानी प्रति सप्ताह अन्नाहार पर लिखा। इन लेखों में उन्होंने भारतीयों की भोजन-पद्धति पर गंभीरता पूर्वक विचार किया है। ये युवावस्था के लिखे हुए लेख हैं। इस उम्र में इस प्रकार के विषय पर लिखने के लिए आज का युवक भी नहीं सोच सकता है। कई लोगों को स्वाभाविक रूप से लग सकता है कि बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए लंदन गए विद्यार्थी को इस विषय पर लिखने की क्या जरूरत थी। गांधी का भारतीय मन था जो उन्हें युवावस्था में भी इन विषयों की ओर मोड़ता था। चिंतन में भारतीयता के गहरे भाव थे। वे मांसाहारी तथा मांसाहार के फायदे को भी जानते थे। लेकिन वे अन्नाहारी थे तथा उसके प्रबल समर्थक। इसके लिए उन्होंने विभिन्न प्रसंगों में भारत भर के खान-पान की चर्चा करते हुए अन्नाहार के लाभ को स्थापित किया है। 14/3/1891 के लेख में उन्होंने भारतीय ग्वालों के प्रत्यक्ष उदाहरण से अपनी बात को स्थापित करते हुए लिखा, "ग्वाले का शरीर सुडौल होता है। उसके शरीर में कोई ऐब शायद ही मिलता है। वह शेर के समान भयावना न होते हुए भी ताकतवर और बहादुर होता है और सीधा भी इतना होता है, जैसा कि भेमना। उसका कद आतंक न पैदा करने वाला होता हुआ भी प्रभावोत्पादक होता है। कुल मिलाकर भारत का ग्वाला अन्नाहारियों का एक श्रेष्ठ उदाहरण है और जहाँ तक शारीरिक बल का संबंध है। वह किसी भी मांसाहारी की तुलना में बहुत अच्छा ठहर सकता है।

231

उम्मीद का दामन : गाँधी

(हिंदी स्वराज के विशेष संदर्भ में)

डॉ. नवीन नन्दवाना

"तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहं तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ, जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है? तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहं समाप्त होता जा रहा है।" गांधीजी का यह जंतर हमें एक दिशा देते हुए कई विचार हमारे मन मस्तिष्क में जगाता है। गांधीजी इसके माध्यम से हमें अन्न के नाश के साथ गरीब और कमजोर (दरिद्रनारायण) के प्रति संवेदना और उसके कल्याण की दिशा में हमारे कर्तव्यों और प्रयासों का स्मरण दिला रहे हैं। साथ ही गांधी यहाँ स्वराज्य की हिमाकत भी कर रहे हैं।

राष्ट्रपिता के नाम से प्रसिद्ध और प्रत्येक भारतीय के हृदय में विराजमान जन-जन के चहेते महात्मा गांधी (बापू) की भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। सत्य और अहिंसा को अपना हथियार बनाकर एक लाठी धारण करने वाले और एक वस्त्र (धोती) पहनने वाले अहिंसा के पुजारी गांधी ने संपूर्ण विश्व को सत्य, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव और करुणा का संदेश दिया। 'वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीड़ पराई जाणे रे' में विश्वास रखने वाले गांधी ने भारतीय लोक मन में अपनी विशिष्ट छवि बनायी। दूसरों की पीड़ा और दुख-दर्द को दूर करने के लिए सदैव प्रयासरत गांधी के योगदान का स्मरण अपनी कविता 'बापू के प्रति' में सुमित्रानंदन पंत इस प्रकार करते हैं–

"सुख भोग खोजने आते सब, आए तुम करने सत्य खोज,
जग की गिड़ी के पुतले जन, तुम आत्मा के मन के मनोज।
जड़ता, स्पर्धा, हिंसा में भर, चेतना, अहिंसा, नम्र-ओज,
पशुता का पंकज बना दिया, तुमने मानवता का सरोज।"

आज न केवल देश को बल्कि संपूर्ण विश्व को गांधी और उनके चिंतन की महती आवश्यकता है। सत्य और अहिंसा के पुजारी की हम 150 वीं जयंती का वर्ष महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। आज के वैश्विक परिदृश्य पर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि आज भी हम आतंकवाद, हिंसा से जूझ रहे हैं। अधिक पूंजीपति और विश्व शक्ति बनने की होड़ में हम परमाणु अस्त्र-शस्त्रों के संचय की होड़ में लगे हैं।

गांधीजी किसी भी विषय पर विचार करते समय एक सार्थक बहस और विचार के पक्षधर थे। युगीन समस्याओं पर विचार करते समय एक तार्किक हल खोजने के वे सदैव पक्षधर रहे हैं। अध्ययन में रुचि रखने वाले गांधी में लेखन की प्रवृत्ति थी। उनके इस लेखन को हम विभिन्न टिप्पणियों, पत्रों, लेखों, पुस्तकों और पत्रिकाओं के संपादन के रूप में देख सकते हैं। गांधी ने 'हरिजन', 'इंडियन ओपिनियन'

और 'यंग इंडिया' आदि पत्रों का संपादन किया। आपके संपादन में निकली 'नवजीवन' नामक मासिक पत्रिका भी बहुत चर्चित रही। गांधी ने पुस्तक लेखन की दशा में भी अपनी कलम चलाई। आपने 'हिंद स्वराज', 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह', 'सत्य के प्रयोग' (आत्मकथा) तथा 'गीता पदार्थ कोश' नामक ग्रंथों की रचना की। गांधी का यह लेखन गुजराती में रचित है किंतु इन रचनाओं के हिंदी और अंग्रेजी में भी अनुवाद हुए हैं।

'हिंद स्वराज' नामक ग्रंथ की रचना गांधीजी इंग्लैंड से वापसी के समय किल्डोनन कैसिंल नामक जहाज की यात्रा के दौरान मूल रूप से गुजराती भाषा में की। यह ग्रंथ बाद में 'इंडियन ओपिनियन' में प्रकाशित हुआ। यह ग्रंथ पाठक और संपादक के बीच संवाद शैली में रचित है। ग्रंथ के प्रथम बारह अध्याय 11 दिसंबर, 1909 तथा शेष आठ अध्याय 18 दिसंबर, 1909 को इंडियन ओपिनियन में छपे। लंदन प्रवास के दौरान डॉ. प्राणजीवन मेहता के साथ हुए संवाद को ही गांधीजी ने इस पुस्तक के रूप में अभिव्यक्त किया। स्वयं गांधीजी ने इस बात की स्वीकारोक्ति बंगाल की मालिकंदा बैठक में 11 फरवरी, 1940 को दी। पुस्तक के संदेश में स्वयं गांधीजी ने इस पुस्तक की भाषा और वैशिष्ट्य के बारे में लिखा है कि- "जिन सिद्धांतों के समर्थन के लिए 'हिंद स्वराज' लिखी गई थी, उन सिद्धांतों की जाहिरात करना चाहती हैं, यह मुझे अच्छा लगता है..... यह पुस्तक अगर आज मुझे फिर से लिखनी हो तो कहीं-कहीं मैं उसकी भाषा बदलूँगा। लेकिन इसे लिखने के बाद जो तीस साल मैंने अनेक आंधियों में बिताए हैं, उनमें मुझे इस पुस्तक में बताए हुए विचारों में फेरबदल करने का कुछ भी कारण नहीं मिला..... पाठक इतना भी जान लें कि दक्षिण अफ्रीका के हिंदुस्तानियों में जो सड़न दाखिल होने वाली ही थी, उसे इस पुस्तक ने ही रोका था।"

पुस्तक की प्रस्तावना में गांधी ने इस पुस्तक में वर्णित विचारों के संबंध में लिखा है कि- "जो विचार यहाँ रखे गए हैं, वे मेरे हैं और मेरे नहीं भी हैं। वह मेरे हैं क्योंकि उनके मुताबिक बरतने की मैं उम्मीद रखता हूँ, वे मेरी आत्मा में गढ़े-जड़े हुए जैसे हैं। वे मेरे नहीं हैं, क्योंकि सिर्फ मैंने ही उन्हें सोचा हो सो बात नहीं। कुछ किताबें पढ़ने के बाद वे बने हैं। दिल में भीतर ही भीतर मैं जो महसूस करता था, उसका इस किताब ने समर्थन किया।" गांधी का मत है कि पुस्तक में वर्णित समस्त विचार उन सब हिंदुस्तानियों के भी हैं जिन पर अभी पश्चिमी सभ्यता की धुन सवार नहीं हुई है। गांधी स्पष्टतः कहते हैं कि इस ग्रंथ के पीछे उनका उद्देश्य सत्य की खोज और राष्ट्र सेवा है और वे इन दोनों उद्देश्यों को केवल विचार तक नहीं रखना चाहते बल्कि व्यवहार में भी अपनाना चाहते हैं। 'हिंद स्वराज : विषय और संदर्भ' नामक अपने लेख में अनिल दत्ता वैश्य लिखते हैं कि- "गांधीजी ने 'हिंद स्वराज' में एक ओर पाश्चात्य सभ्यता के सैद्धांतिक आधार को रचनात्मक चुनौती दी है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने कुछ मौलिक अवधारणाओं का विकास भी किया जो बाद में 'गांधीवाद' कहलाया। स्वराज, स्वदेशी और सत्य ऐसे तीन महत्त्वपूर्ण विषय थे जिनकी उपस्थिति न केवल उनकी रचनाओं में दिखती है बल्कि उनके सार्वजनिक जीवन में पूरी सत्यता के साथ दिखती है।"

हिंदुस्तान में स्वराज्य की बात को लेकर गांधी के मन में सदैव विचारों की सरिता बहती रही। स्वराज्य की बात को पत्रकारिता से जोड़ते हुए गांधी लिखते हैं कि- "अखबार का एक काम तो है लोगों की भावनाएँ जानना और उन्हें ज़ाहिर करना, दूसरा काम है लोगों में अमुक ज़रूरी भावनाएँ पैदा करना

और तीसरा काम है लोगों में दोष हो तो चाहे जितनी मुसीबतें आने पर बेधड़क होकर उन्हें दिखाना। आपके सवाल का जवाब देने में ये तीनों काम साथ-साथ आ जाते हैं। लोगों की भावनाएँ कुछ हद तक बतानी होंगी, न हो वैसी भावनाएँ उनमें पैदा करने की कोशिश करनी होगी और उनके दोषों की निंदा भी करनी होगी।''

स्वराज्य की अवधारणा पर विचार करते हुए गांधीजी ने लिखा है कि- ''मेरे स्वराज्य को लोग अच्छी तरह समझ लें। भूल न करें। संक्षेप में वह है विदेशी सत्ता से संपूर्ण मुक्ति और साथ ही संपूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता। इस प्रकार एक सिरे पर राजनीतिक स्वतंत्रता है और दूसरे सिरे पर आर्थिक स्वतंत्रता। परंतु इसके दो सिरे और भी है। उनमें से एक है, नैतिक और सामाजिक उत्थान ; तथा दूसरा है धर्म- धर्म अपने ऊँचे से ऊँचे अर्थ में। इसमें हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई आदि सब आ जाते हैं ; परंतु एक जो इन सबसे ऊपर है, उसे आप सत्य का नाम दे सकते हैं। सत्य यानी केवल प्रासंगिक ईमानदारी नहीं, बल्कि वह परम सत्य तत्व जो सर्वव्यापी है और जो उत्पत्ति और क्षय से परे है।''

गांधी हमारी पीढ़ी को यह संदेश देते हैं कि हमें उन महान पुरुषों के पावन कार्यों का स्मरण करना चाहिए जिन्होंने राष्ट्र हित में अपना जीवन अर्पित कर दिया। गांधी कहते हैं कि जैसे किसी शिक्षक से कुछ सीख कर हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है किंतु कभी भी हम स्वयं को उस शिक्षक से अधिक ज्ञानी नहीं मानते, ठीक उसी प्रकार देश के महापुरुषों के अवदान को भी हमें हमारे कार्यों के समक्ष किसी तरह कमतर नहीं आँकना चाहिए। गांधीजी किसी भी विषय में निष्पक्ष सोच और विचार के पक्षधर थे। वे कहते थे कि हमें कभी भी इस तरह का विचार नहीं पालना चाहिए कि जो मेरे अनुसार व्यवहार न करता हो वह देश का दुश्मन है। हिंद स्वराज्य में गांधी अंग्रेजों के विषय में ये सोचते हैं कि- ''जो नियम हिंदुस्तानियों के बारे में है, वही अंग्रेजों के बारे में समझना चाहिए। सारे के सारे अंग्रेज बुरे हैं, ऐसा तो मैं नहीं मानूँगा। बहुत से अंग्रेज चाहते हैं कि हिंदुस्तान को स्वराज्य मिले। उस प्रजा में स्वार्थ ज्यादा है यह ठीक है, लेकिन उससे हर एक अंग्रेज बुरा है ऐसा साबित नहीं होता। जो हक, न्याय चाहते हैं, उन्हें सबके साथ न्याय करना होगा।''

बंग-भंग पर विचार करते हुए गांधी ने इस ग्रंथ में एक नई विचार दृष्टि दी है। गांधी का मत है कि उस समय बंगाल के निवासियों ने लॉर्ड कर्जन से निवेदन किया किंतु कर्जन ने उनके निवेदन और विरोध को नजरअंदाज करते हुए बंग-भंग की घोषणा कर दी। गांधी का मत है कि जिस दिन अपमान भरी भाषा के साथ बंग-भंग हुआ। उसी दिन अंग्रेज हुकूमत के टुकड़े हो गए ऐसा माना जा सकता है। गांधी इस बात को जानते हैं कि प्रजा एक दिन में नहीं बनती। प्रजा बनने में वर्षों लग जाते हैं। बंग-भंग को जागृति का कारण मानने वाले गांधी से जब उनसे फैली अशांति के बारे में पूछा गया तो गांधी ने कहा कि- ''इंसान नींद में से उठता है तो अंगड़ाई लेता है, इधर-उधर घूमता है और अशांत रहता है। उसे पूरा भान आने में कुछ वक्त लगता है। उसी तरह अगर ये बंग-भंग से जागृति आई है, फिर भी बेहोशी नहीं गई है। अभी हम अंगड़ाई लेने की हालत में हैं। अभी अशांति की हालत है। जैसे नींद और जाग के बीच की हालत जरूरी मानी जानी चाहिए और इसलिए वह ठीक कही जाएगी, वैसे बंगाल में और हम उस कारण से हिंदुस्तान में जो अशांति फैली है, वह भी ठीक है। अशांति है यह हम जानते हैं, इसलिए शांति का समय आने की शक्यता है। नींद से उठने के बाद हमेशा अंगड़ाई लेने की हालत

में हम नहीं रहने, लेकिन देर-सबेर अपनी शक्ति के मुताबिक पूरे जागते ही हैं। इसी तरह इस अशांति में से हम जरूर छूटेंगे। अशांति किसी को नहीं भाती।''

'स्वराज्य क्या है' इस पर विचार करते हुए गांधी यह कहते हैं कि स्वराज्य की बात तो सभी करते हैं किंतु वास्तव में स्वराज्य है क्या? इस विचार को हम ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं। वे कहते हैं कि यहाँ हर कोई अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने की बात करता है किंतु उन्हें बाहर क्यों निकालना है, इस बारे में कोई नहीं जानता। यदि अंग्रेज हमें वह सब देने लगे जो हम चाहते हैं तो फिर अंग्रेजों को बाहर निकालना है या नहीं, इस पर भी हमारे देशवासियों का कोई विचार नहीं है। हम यह मानते हैं कि जब हमारे पास अपनी फौज, जंगी-बेड़ा होगा तभी विश्वपटल पर हमारी धाक होगी। इस विचार के संबंध में गांधी का मत है कि- ''यह तो आपने अच्छी तस्वीर खींची। इसका अर्थ यह हुआ कि हमें अंग्रेजी राज्य तो चाहिए, पर अंग्रेज (शासक) नहीं चाहिए। आप बाघ का स्वभाव तो चाहते हैं लेकिन बाघ नहीं चाहते। मतलब यह हुआ कि आप हिंदुस्तान को अंग्रेज बनाना चाहते हैं और हिंदुस्तान जब अंग्रेज बन जाएगा तब वह हिंदुस्तान नहीं कहा जाएगा, लेकिन सच्चा इंग्लिस्तान कहा जाएगा, यह मेरी कल्पना का स्वराज्य नहीं है।''

इंग्लैंड की हालत पर विचार करते हुए गांधीजी ब्रिटिश संसद के लिए 'बांझ' और 'बेसवा' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। गांधी का कहना है कि आज तक उसने कोई अच्छा काम नहीं किया और जो किए भी हैं वह भी केवल दबाव में आकर। उसके मालिक भी समय के साथ-साथ बदलते रहते हैं। गांधी का कहना है कि पार्लियामेंट में लोगों को जनता की भलाई के उद्देश्य से जाना चाहिए। उसे किसी काम के लिए प्रार्थना पत्र या दबाव की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए। इंग्लैंड की संसद के लिए गांधीजी का कहना था कि- ''उस पार्लियामेंट का काम इतना सरल होना चाहिए कि दिन-ब-दिन उसका तेज बढ़ता जाए और लोगों पर उसका असर होता जाए, लेकिन इससे उल्टे इतना तो सब कबूल करते हैं कि पार्लियामेंट के मेंबर दिखावटी और स्वार्थी पाए जाते हैं। सब अपना मतलब साधने की सोचते हैं। सिर्फ डर के कारण ही पार्लियामेंट कुछ काम करती है। जो काम आज किया वह कल उसे रद्द करना पड़ता है। आज तक एक भी चीज को पार्लियामेंट ने ठिकाने लगाया हो ऐसी कोई मिसाल देखने में नहीं आती। बड़े सवालों की चर्चा जब पार्लियामेंट में चलती है, तब उसके मेंबर पैर फैलाकर लेटते हैं और बैठे-बैठे झपकियाँ लेते हैं। उस पार्लियामेंट में मेंबर इतने जोरों से चिल्लाते हैं कि सुनने वाले हैरान-परेशान हो जाते हैं। उसके एक महान लेखक ने उसे 'दुनिया का बातूनी' जैसा नाम दिया है।''

गांधी इंग्लैंड की पार्लियामेंट की कार्य पद्धति पर चिंता व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि लोग वहाँ बिना विचारे अपनी पार्टी की संबद्धता के आधार पर किसी निर्णय के समर्थन में अपना मत देते हैं। उनका कहना है कि- ''ब्रिटिश पार्लियामेंट महज़ प्रजा का खिलौना है और वह खिलौना प्रजा को भारी खर्च में डालता है।'' गाँधी की इस चिंता से न केवल भारत की संसद बल्कि संपूर्ण विश्व के सभी देशों के नीति निर्धारकों को सीख लेनी चाहिए। गांधी का मत है कि- ''जो अंग्रेज 'वोटर' हैं, उनको धर्म पुस्तक (बाइबल) तो है अखबार। वे अखबारों से अपने विचार बनाते हैं। अखबार अप्रमाणिक होते हैं, एक ही बात को दो शक्लें देते हैं।'' इसलिए वे भारतीयों को भी बताना चाहते हैं कि हमें अंग्रेजों की नकल नहीं करनी चाहिए।

'सभ्यता के दर्शन' पर विचार करते हुए गांधीजी का मत है कि- "आज की सभ्यता के मोह में फँसे हुए लोग उसके खिलाफ नहीं लिखेंगे, उल्टे उसको सहारा मिले ऐसी ही बातें और उसकी दलीलें ढूँढ़ निकालेंगे। यह वे जान-बूझकर करते हैं, ऐसा भी नहीं है। वे जो लिखते हैं उसे खुद सच मानते हैं। नींद में आदमी जो सपना देखता है, उसे वह सही मानता है। जब उसकी नींद खुलती है तभी उसे अपनी गलती मालूम होती है।" अतः हमें चीजों पर तार्किक ढंग से सोचना चाहिए, नींद में देखे जा रहे स्वप्न की भाँति नहीं। गांधी कहते हैं कि आज लोग परंपरागत और बुनियादी चीजों के स्थान पर बाहरी दुनिया की खोजों एवं शरीर सुख को सार्थक मानते हुए पहनावे, भवनों, अस्त्र-शस्त्रों एवं उपकरणों में आए बदलाव को किसी सभ्यता की निशानी मानते हैं। लोग हल की जगह यंत्र को और बैलगाड़ी की जगह रेलगाड़ी को सभ्यता की निशानियाँ मानने लगे हैं। इसी सभ्यता के कारण आज लोग पैसे व सुख भोग के लालच में गुलाम बनते जा रहे हैं। गांधी का कहना है कि- "यह सभ्यता तो अधर्म है और यूरोप में इतने दरजे तक फैल गई है कि वहाँ के लोग आधे पागल जैसे देखने में आते हैं। उनमें सच्ची कुव्वत नहीं है, वे नशा करके अपनी ताकत कायम रखते हैं। एकांत में बैठ ही नहीं सकते। जो स्त्रियाँ घर की रानियाँ होनी चाहिए, उन्हें गलियों में भटकना पड़ता है, या कोई मज़दूरी करनी पड़ती है। इंग्लैंड में ही चालीस लाख गरीब औरतों को पेट के लिए सख्त मज़दूरी करनी पड़ती है और आजकल इसके कारण 'सफ्रेजेट' (महिला मताधिकार) आंदोलन चल रहा है।" इस प्रकार गांधीजी की दृष्टि सभ्यता को लेकर कुछ अलग प्रकार की है।

हिंदुस्तान की तत्कालीन दशा पर विचार करते हुए पाठक के इस प्रश्न पर कि- "अगर आज की सभ्यता बिगाड़ करने वाली है, एक रोग है, तो ऐसी सभ्यता में फँसे हुए अंग्रेज हिंदुस्तान को कैसे ले सके ? इसमें वे कैसे रह सकते हैं ?" स्वराज्य के पक्षधर गांधी कहते हैं कि- "हिंदुस्तान अंग्रेजों ने लिया सो बात नहीं, बल्कि हमने उन्हें दिया है। हिंदुस्तान में वे अपने बल से नहीं टिके हैं बल्कि हमने उनको टिका रखा है। ....हमारे देश में वे दरअसल व्यापार के लिए आए थे। आप अपनी कंपनी बहादुर को याद कीजिए। उसे बहादुर किसने बनाया? वे बेचारे तो राज करने का इरादा भी नहीं रखते थे। कंपनी के लोगों की मदद किसने की? उनकी चाँदी को देखकर कौन मोह में पड़ जाता था? उनका माल कौन बेचता था? इतिहास सबूत देता है कि यह सब हम ही करते थे।" गांधी के अनुसार यही करना इस रोग की जड़ है। हमारी आपसी फूट से अंग्रेज व्यापारी से शासक बन गए। अतः गांधी के इस कथन से हमें आज यह सीखने की जरूरत है कि आज हमारे देश की आंतरिक कलह का लाभ विदेशी फिर न उठा लें।

हिंदुस्तान की दशा पर विचार करते हुए गांधी कहते हैं कि हिंदुस्तान का नुकसान जितना अंग्रेजों से नहीं हुआ उतना वर्तमान सभ्यता से हुआ है। उनका मानना है कि हमें अपने व्यवहार, समाज और सोच में बदलाव करना होगा। धर्म को लेकर गांधीजी का मत कुछ भिन्न प्रकार का था। वे कहते हैं कि- "मुझे तो धर्म प्यारा है, इसलिए पहला दुःख मुझे यह है कि हिंदुस्तान धर्म-भ्रष्ट होता जा रहा है। धर्म का अर्थ मैं यहाँ हिंदू, मुस्लिम, जरथोस्ती धर्म नहीं करता, लेकिन इन सब धर्मों के अंदर जो 'धर्म' है वह हिंदुस्तान से जा रहा है। हम ईश्वर से विमुख होते जा रहे हैं।" गांधीजी अहिंसा के पुजारी थे। वे किसी भी कीमत पर हिंसा को स्वीकार नहीं करते थे। अहिंसा के विषय में गांधीजी का मत था कि- "सभी सुविकसित

समाज अहिंसा के कानून पर आधारित हैं, इसी नियम के तहत कोई भी सुव्यवस्थित समाज समझदार बन सकता है और जीवन सार्थक कहा जा सकता है। जहाँ भी आपका मुकाबला अपने प्रतिद्वंद्वी से हो, उसे प्यार से जीतिए।"

धर्म के पाखंड के विषय में चर्चा करते हुए गांधी जी कहते हैं कि जैसे प्रकाश के साथ अंधकार का नाता है, जैसे वस्तु के साथ परछाई जुड़ी रहती है, ठीक उसी प्रकार कई बार धर्म के साथ-साथ पाखंड जुड़ता जाता है किंतु हमें धर्म के सबल पक्ष को अपनाना चाहिए। पाठक के इस प्रश्न पर कि धर्म के नाम पर विश्व भर में हजारों बेगुनाह लोग मारे गए किंतु सभ्यता ऐसा नहीं करती का जवाब देते हुए गांधी कहते हैं कि- "सभ्यता की होली में जो लोग जल-मरे हैं, उनकी तो कोई हद ही नहीं है। उसकी खूबी यह है कि लोग उसे अच्छा मानकर उसमें कूद पड़ते हैं। फिर वे न तो रहते दीन के और ना रहते दुनिया के। वे सच बात को बिल्कुल भूल जाते हैं। सभ्यता चूहे की तरह फूँककर काटती है। उसके असर जब हम जानेंगे तब पुराने वहम के मुकाबले में मीठे लगेंगे। मेरा कहना यह नहीं कि हमें उन वहमों को कायम रखना चाहिए। नहीं, उनके खिलाफ तो हम लड़ेंगे ही, लेकिन वह लड़ाई धर्म को भूलकर नहीं लड़ी जाएगी, बल्कि सही तौर पर धर्म को समझकर और उसकी रक्षा करके लड़ी जाएगी।" गांधी की दृष्टि में हिंदुस्तानी नामर्द नहीं है, केवल अधर्म व अज्ञान दशा के कारण मैकाले ने हिंदुस्तान को नामर्द मान लिया था। गांधी किसी भी मनुष्य, समाज और राष्ट्र के लिए निर्भयता के भाव को अनिवार्य मानते हैं। उनका कहना है कि निर्भयता में ही बल है और जब तक हमें अपने ही भाई से डर है तब तक हम अपना मकसद कभी हासिल नहीं कर पाएंगे। यही बात न केवल परिवार बल्कि समाज व राष्ट्र पर भी लागू होती है।

गांधी आधुनिक सभ्यता की तुलना क्षय रोग से करते हैं वे कहते हैं कि रेलों, वकीलों और डॉक्टरों ने भारत को बहुत प्रभावित किया है। रेलों के विस्तार के साथ-साथ समस्याएँ भी बढ़ी हैं। दुर्गम दूरस्थ स्थानों पर पहले लोग पवित्र हृदय लिए जाते थे। अब परिवहन की सुगमता से ठगों की टोली भी वहाँ पहुँचने लगी है। एक राष्ट्र वाले विचार को लेकर कहते हैं कि- "जब अंग्रेज हिंदुस्तान में नहीं थे तब हम एक राष्ट्र थे, हमारे विचार एक थे, हमारा रहन-सहन एक था, तभी तो अंग्रेजों ने यहाँ एक राज्य कायम किया। भेद तो हमारे बीच बाद में उन्होंने पैदा किए।" सांप्रदायिक सौहार्द्र की बात करते हुए गांधी कहते हैं कि यह मुल्क हिंदू, मुसलमान या किसी अन्य मजहब को मानने वाले किसी एक धर्म का नहीं बल्कि सभी का है। अतः सभी धर्मों के लोगों द्वारा परस्पर दूसरे धर्मों के लोगों को देशी भाई मानते हुए एक-दूसरे के स्वार्थ व कार्यों में सहायता के लिए तत्पर रहना चाहिए। हमें उस धर्म और उसके अनुयायियों का भी सम्मान करना चाहिए जो भले ही हमें पसंद न हो।

गांधी गौ-रक्षा को लेकर अपना स्पष्ट मत रखते हैं कि- "मैं खुद गाय को पूजता हूँ यानी मान देता हूँ। गाय हिंदुस्तान की रक्षा करने वाली है, क्योंकि उसकी संतान पर हिंदुस्तान का, जो खेती प्रधान देश है, आधार है, गाय कई तरह से उपयोगी है। यह तो मुसलमान भाई भी कुबूल करेंगे। लेकिन जैसे मैं गाय को पूजता हूँ वैसे मनुष्य को भी पूजता हूँ। जैसे गाय उपयोगी है, वैसे मनुष्य भी, फिर चाहे वह मुसलमान हो या हिंदू, उपयोगी है। तब क्या गाय को बचाने के लिए मैं मुसलमान से लड़ूंगा? क्या उसे मैं मारूंगा? ऐसा करने से मैं मुसलमान का और गाय का भी दुश्मन बनूंगा। इसलिए मैं कहूंगा कि गाय की रक्षा करने का एक यही उपाय है कि मुझे अपने मुसलमान भाई के सामने हाथ जोड़ने चाहिए और उसे देश की

खातिर गाय को बचाने के लिए समझाना चाहिए। ....अगर मैं बालिश्त भर नमूँगा, तो वह हाथभर नमेगा और अगर वह नहीं भी नमे तो मेरा नमना गलत नही कहलाएगा।" इस प्रकार गांधी गाय को बचाने के लिए विभिन्न धर्मों मे परस्पर संवाद, सहयोग, शांति व मैत्री के भावों को प्रमुखता देते हैं। उनका मानना है कि समस्याओं का हल मिल-बैठकर प्रेमपूर्वक निकाला जा सकता है। हिंसा या द्वेष से नहीं। गांधी का कहना है कि किसी भी धर्म ग्रंथ या धर्म मे सभी बाते बुरी नहीं है। 'गीता' की कई बातें मुसलमानों को व 'कुरान' की कई बाते हिंदुओ को स्वीकार्य होगी। अतः हमें एक-दूसरे के धर्म व धर्म-ग्रंथों को सम्मान करना चाहिए। यदि हिंदू या मुस्लिम परस्पर स्नेह से रहें, एक दूसरे पर विश्वास रखें तो किसी तीसरी ताकत (अंग्रेज) के बीच आने का मौका नही मिलेगा। गाँव के संबंध में भी गांधी विचार करते हुए आदर्श गाव की बात करते हैं। वे कहते है कि- "मेरे आदर्श गाँव में बुद्धिमान मनुष्य होंगे। वे पशुओं की तरह गंदगी और अंधेरे में नही रहेंगे। वहाँ न प्लेग होगा, न हैजा और न ही चेचक, कोई आलसी नहीं होगा। कोई विलासिता मे नही डूबेगा। हर किसी को अपने हिस्से के शारीरिक श्रम का योगदान करना होगा।"

अदालतों और वकीलों की कार्य पद्धति पर भी गांधीजी ने हमारा ध्यान खींचा है। वहीं डॉक्टरी पेशे में बढ़ रही व्यवसाय-वृत्ति की ओर भी गांधी ने खुलकर लिखा है। गांधी बड़े शहरों जिसमें आदमी भूखा सोये, कल-कारखानों जिसमें आदमी का शोषण हो, पश्चिम के अंधानुकरण आदि के विरोधी रहे। सभ्यता को परिभाषित करते हुए गांधी कहते हैं कि- "सभ्यता वह आचरण है जिससे आदमी अपना फर्ज अदा करता है। फर्ज अदा करने के मानी है नीति का पालन करना। नीति के पालन का मतलब है अपने मन और इंद्रियों को वश में रखना। ऐसा करते हुए हम अपनी असलियत को पहचानते हैं। यही सभ्यता है। इससे जो उल्टा है, वह बिगाड़ है।"

गांधी के अनुसार हजारों साल पहले से खेती मे उपयोग आने वाले हल, झोपड़े और हमारी शिक्षा आज भी कारगर है। यांत्रिक सभ्यता की परेशानियों और मूल्यहीनता से गांधी भलीभाँति परिचित थे। वे श्रम की महत्ता जानते थे। अतः यंत्र की अपेक्षा गांधी को हाथ-पैरों की ताकत पर ज्यादा भरोसा था। गांधी महानगरो व नहीं की सभ्यता के भी पक्षधर नहीं थे, वे गाँव व ग्रामीण-जन के हिमायती रहे हैं। तभी तो वह कहते हैं कि- "उन्होंने (पूर्वजों) सोचा कि बड़े शहर खड़े करना बेकार की झंझट है। उनमें लोग सुखी नहीं होंगे। उनमें धूर्तों की टोलियाँ और वेश्याओं की गलियाँ पैदा होंगी, गरीब अमीरों से लूटे जाएंगे। इसलिए उन्होंने छोटे देहातों से संतोष माना। उन्होंने देखा कि राजाओं और उनके तलवार के बनिस्बत नीति की बल ज्यादा बलवान है।" गांधी के अनुसार यहाँ वकील, डॉक्टर, अदालतें सभी जनता की सेवा के लिए थे। धंधे नहीं बन थे। आम प्रजा अपने खेत का मालिकाना हक भोगती थी, यही उनका सच्चा स्वराज था।

मशीनीकरण के संबंध में गांधीजी के मत को अपने लेख 'हिंदी स्वराज और एंथनी जे। परेल' नामक लेख मे व्यक्त करते हुए अंजु झाम्ब लिखती हैं कि- "मशीनें इस आधुनिक सभ्यता का प्रमुख प्रतीक है। मशीनों की आलोचना करते हुए गांधी मानते हैं कि मशीनीकरण ने मनुष्य को आलसी बनाया है और श्रम की अवधारणा को बदल दिया है। मजदूरों की स्थिति बदतर हुई है। उनके काम करने की परिस्थितियाँ खराब हुई हैं जिसके कारण उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा है। गांधी के अनुसार, हमें यह समझना है कि मशीनें एक प्रकार की बुराई हैं। उनके बिना भी काम चल सकता है। प्रकृति ने यह कभी नहीं चाहा कि किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इनका इस्तेमाल किया जाए। यह तो मनुष्य का बढ़ता

हुआ लालच तथा उसकी इच्छाएँ हैं कि प्रकृति के विपरीत जाकर भी वह मशीनों के द्वारा अपने उद्देश्य को साधना चाहता है।"

जब गांधी से यह पूछा गया इस देश में हजारों बाल विधवाएँ हैं, बाल विवाह होते हैं, नियोग, हिंसा, वेश्यावृत्ति विद्यमान हैं, जहाँ आज भी धर्म के नाम पर पशु-बलि दी जाती है। उसके विषय को आप क्या कहेंगे? तो गांधी कहते हैं कि यह सचमुच दोष है, सभ्यता के अंश नहीं हैं। इनको दूर करने के प्रयास सदैव होते रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। गांधी के यहाँ स्वदेशी अभियान का अर्थ राष्ट्रहित है। वे देश की आजादी के लिए हिंसा का सहारा न लेने के पक्षधर थे। सत्याग्रह और आत्मबल पर विचार करते हुए कहते हैं कि ये मनुष्य के आंतरिक बल हैं। इस प्रकार के बल के इतिहास में दर्शन नहीं होते। कारण कि इतिहास कोलाहल, युद्ध और संघर्ष को दर्ज करता है सत्याग्रह और आत्मबल को नहीं। गांधी का मत है कि- "दुनिया का आधार हथियार बल पर नहीं है, बल्कि सत्य, दया या आत्मबल पर है।"

सत्याग्रह को समझाते हुए गांधी कहते हैं कि- "सत्याग्रह या आत्मबल को अंग्रेजी में 'पैसिव रेज़िस्टेन्स' कहा जाता है। जिन लोगों ने अपने अधिकार पाने के लिए खुद दुःख सहन किय था, उनके दुःख सहने के ढंग के लिए यह शब्द बरता गया है। उसका ध्येय लड़ाई के ध्येय से उल्टा है। जब मुझे कोई काम पसंद न आए और वह काम मैं न करूँ, तो उसमें मैं सत्याग्रह या आत्मबल का उपयोग करता हूँ।" सत्याग्रह की ताकत को लेकर गांधीजी का मत है कि- "सत्याग्रह ऐसी तलवार है, जिसके दोनों ओर धार है। उसे चाहे जैसे काम में लिया जा सकता है। जो उसे चलाता है और जिस पर वह चलाई जाती है, वे दोनों सुखी होते हैं। वह खून नहीं निकालती, लेकिन उससे भी बड़ा परिणाम ला सकती है। उसको जंग नहीं लग सकती। उसे कोई चुराकर ले नहीं जा सकता। अगर सत्याग्रही दूसरे सत्याग्रही के साथ होड़ में उतरता है, तो उसमें उसे थकान लगती ही नहीं। सत्याग्रही की तलवार को म्यान की जरूरत नहीं रहती। उसे कोई छीन नहीं सकता। फिर भी सत्याग्रह को आप कमजोरों का हथियार मानें तो उसे अंधेर ही कहा जाएगा।" गांधी कहते थे कि हिंदुस्तान का अर्थ मुट्ठी भर राजाओं से नहीं है। उनकी दृष्टि से हिंदुस्तान की संपूर्ण छवि यदि बनानी है तो उन करोड़ों किसानों को भी सम्मिलित करना होगा जिनके श्रम से पैदा अन्न हम सभी का पेट भरने में सहायक है। सत्याग्रह के पालन के लिए गांधी ब्रह्मचर्य का पालन करना अनिवार्य मानते हैं। बिना इन गुणों के सत्याग्रह के पथ पर चलना संभव नहीं है। एक सच्चे सत्याग्रही में गरीबी को स्वीकार करने की ताकत होनी चाहिए। "सत्याग्रह कोई दैवीय शक्ति नहीं, यह सामाजिक और राजनीतिक मामलों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने का तरीका है। सत्याग्रह वह शक्ति है जो सामाजिक क्षेत्र में स्त्री-पुरुष के संबंध के लिए, आर्थिक क्षेत्र में श्रम की प्रतिष्ठा के लिए और प्रतिकार के क्षेत्र में आत्ममर्यादा को संभालने के लिए जो रोमहर्षक और रोमांचकारी प्रयोग गांधीजी ने किए, ऐसी मिसाल दुनिया के सामने बहुत कम है।"

शिक्षा के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए गांधी जी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंद स्वराज' में कहते हैं कि शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान नहीं है। अंग्रेजी शिक्षा पर विचार करते हुए कहते हैं कि मैकाले द्वारा डाली गई शिक्षा की बुनियाद गुलामी में डालने जैसी है। गांधी लिखते हैं कि- "जिस शिक्षा को अंग्रेजों ने ठुकरा दिया वह हमारा सिंगार बनती है, यह जानने लायक है। उन्हीं के विद्वान कहते रहते हैं कि उसमें यह अच्छा नहीं है, वह अच्छा नहीं है। वे जिसे भूल से गए हैं, उसी से हम अपने अज्ञान के कारण चिपके रहते हैं। .....आपको समझना चाहिए की अंग्रेजी शिक्षा लेकर हमने अपने राष्ट्र को

गुलाम बनाया है। अंग्रेजी शिक्षा से दंभ, राग, जुल्म वगैरा बढ़े हैं। अंग्रेजी शिक्षा पाए हुए लोगों ने प्रजा को ठगने में, उसे परेशान करने में कुछ भी कसर नहीं छोड़ रखी है। ....यह क्या कम जुल्म की बात है कि अपने देश में अगर मुझे इसाफ पाना हो तो मुझे अंग्रेजी भाषा का उपयोग करना चाहिए। बैरिस्टर होने पर मैं स्वभाषा में बोल ही नहीं सकता!" गांधीजी का मत है कि हम सभ्यता के जिस दौर में हैं वहाँ हमें अंग्रेजी सीखनी है तो ऐसे में हमें पहले तय करना होगा कि हम उससे क्या सीखें। उनका कहना है कि पहले हम बच्चों को मातृभाषा सिखाएं फिर कोई अन्य भारतीय भाषा, फिर अंग्रेजी। गांधीजी के अनुसार शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए। साथ ही धर्म व नैतिक शिक्षा देना भी वे जरूरी मानते हैं। हिंदी के विषय में गांधी जी कहते हैं कि- "सारे हिंदुस्तान के लिए जो भाषा चाहिए, वह तो हिंदी ही होनी चाहिए।"

पश्चिमी सभ्यता और मशीनीकरण के प्रभाव पर विचार करते हुए गांधीजी इस बात पर चिंता व्यक्त करते है कि हिंदुस्तान से कारीगरी लगभग खत्म हो गई है। इन सबके पीछे वे मैनचेस्टर की भूमिका स्वीकारते है। गांधी का मत है कि धन और विषय योग व्यक्ति को राह से भटकाते हैं। गांधी कहते हैं कि हम स्वदेशी रहकर स्वराज की धूनी जगाएंगे, उसी में देश की खुशहाली है। "मैं एक ऐसे भारत के निर्माण के लिए काम करूँगा जिसमें गरीब से गरीब व्यक्ति यह महसूस करेगा कि यह उसका देश है जिसके निर्माण में उनका एक प्रभावी योगदान है ; ऐसा भारत जिसमें लोगों का कोई उच्च वर्ग और निम्न वर्ग नहीं होगा; ऐसा भारत जिसमें सभी समुदाय पूर्ण सद्भाव के साथ मिल-जुलकर रहेंगे। ऐसे भारत में अस्पृश्यता के अभिशाप या शराब और नशीली दवाओं के अभिशाप के लिए कोई जगह नहीं होगी। महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार होंगे। चूँकि हम बाकी दुनिया के साथ शांतिपूर्वक रहेंगे, न तो किसी का शोषण करेंगे और न शोषण का शिकार होंगे, इसलिए हमारी सेना सबसे छोटी होगी। लाखों के हितों को नुकसान न पहुँचाने वाले हितों को पूरी निष्ठा से सम्मान दिया जाएगा। व्यक्तिगत रूप से मुझे विदेशी और स्वदेशी के बीच का अंतर पसंद नहीं है। यह मेरे सपनों का भारत है।"

गांधी अपने मन के राज्य को स्वराज मानते थे और उनके इस स्वराज्य की कुंजी सत्याग्रह, आत्मबल और करुणा और स्वदेशी अपनाने में है। गांधी स्पष्ट कहते थे कि जो नहीं करना जैसा है उसे किसी भी परिस्थिति में, प्रलोभन में भी नहीं करें। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गांधीजी ने 'हिंद स्वराज' के माध्यम से तत्कालीन भारत के विविध मुद्दों पर बेबाक अपनी बात कही है। 'हिंद स्वराज' में निहित विभिन्न विषयों और समाधानों पर यदि आज हम विचार करें तो न केवल देश की बल्कि विश्वभर की कई समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं। गोपालकृष्ण गोखले का गांधीजी के विषय में मत था कि- "उनसे अधिक वीर और शुद्ध आत्मा वाला व्यक्ति इस संसार में कभी नहीं हुआ। भारत और संसार के अन्य देशों के असंख्य स्त्री-पुरुषों के लिए महात्मा गाँधी भारतीय परम्परा के श्रेष्ठ तत्त्वों के और जीवन को अहिंसामय बनाने की शाश्वत प्रेरणा के प्रतीक हैं।"

ए-जी-9, रामेश्वरम् अपार्टमेंट, हनुमान नगर
मनवाखेड़ा, उदयपुर (राजस्थान) 313003
संपर्क : 9828351618, 9462751618
nandwana.nk@gmail.com